आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 01-04-2016 ● अंक-481 ● तारीख - 02 अप्रैल 2016, चैत्र कृष्ण - 9 ● शनिवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

रक्षक सत्य

यह विश्वास रखो कि अन्त में सत्य ही तुम्हारी रक्षा करेगा। इसलिए जो भी विपत्ति आए उसकी चिन्ता के बिना इस पर दृढ़ रहो ; क्योंकि यदि तुम सच्चे हो तो अपराध की भावना तुम्हारे हृदय को नहीं कुतरेगी और न कष्ट देगी। कायरता ही तुम्हें सत्य को छिपाने के लिए बाध्य करती है तथा घृणा ही असत्यता की धार को तीव्र करती है। निर्भीक बनो ; क्योंकि असत्य की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रेम-पूर्ण बनो, क्योंकि छल-कपट की कोई आवश्यकता नहीं है। **-सत्य साई बाबा**

❁ ❁ ❁ ❁

श्री सत्य साई एजुकेअर : अवधारणा व अर्थ

श्री सत्य साई एजुकेअर- सत्य साई एजुकेअर की अवधारणा आध्यात्मिक व वैश्विक अवधारणा है, 'एजुकेअर' शब्द का अर्थ है - जो भीतर है, अन्तर में है, उस बाहर निकाल कर लाना।

मानवीय मूल्य प्रत्येक मानव में अन्तर्निहित हैं। बाहर निकाल कर लाने से तात्पर्य उनका व्यवहार में उपयोग करने से है।

भगवद् चिन्तन

जीवन वोध में जीना सीखो विरोध में नहीं, एक सुखप्रद जीवन के लिए इससे श्रेष्ठ कोई दूसरा उपाय नहीं हो सकता। जीवन अनिश्चित है और जीवन की अनिश्चितता का मतलब यह है कि यहाँ कहीं भी और कभी भी कुछ हो सकता है।

यहाँ पर आया प्रत्येक जीव बस कुछ दिनों का मेहमान से ज्यादा कुछ नहीं है, इसीलिए जीवन को हंसी में जीओ, हिंसा में नहीं। चार दिन के इस जीवन को प्यार से जीओ, अत्याचार से नहीं।

जीवन जरुर आनंद के लिए ही है इसीलिए इसे मजाक बनाकर नहीं मजे से जीओ। इस दुनियां में बाँटकर जीना सीखो बंटकर नहीं। जीवन वीणा की तरह है, ढंग से बजाना आ जाए तो आनंद ही आनंद है।

स्वप्नदर्शन क्या वास्तविक दर्शन है?

नहीं, स्वप्न को वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं है, वह मस्तिष्क पर पड़े हुए संस्कारों का निश्चित ही परिवर्तित और परिवर्धित रूप है, स्वप्नावस्था में भी मनुष्य की भावना और बुद्धि काम करती रहती है, इसलिए कभी-कभी स्वप्न से उपयोगी सामग्री भी मिल जाती है, परन्तु ऐसा बहुत कम ही होता है, इसलिए केवल स्वप्न देखकर किसी बात का निश्चय कर लेना ठीक नहीं। **- स्वामी सत्य भक्त जी**

उज्जैन-नासिक में सिंहस्थ की पौराणिक मान्यता

अप्रैल-मई 2016 में मप्र के उज्जैन में सिंहस्थ मेला आयोजित हो रहा है। यह मेला हर 12 वर्ष में एक बार यहां लगता है। उज्जैन की तरह ही हरिद्वार, इलाहाबाद, नासिक में भी इस प्रकार का मेला आयोजित होता है। इन चारों जगहों पर अलग-अलग समय में कुंभ मेला लगता है। उज्जैन और नासिक में लगने वाले मेले को सिंहस्थ कहा जाता है, हरिद्वार और इलाहाबाद में लगने वाले मेले को कुंभ का मेला कहा जाता है।

इसके पीछे ज्योतिषीय वजह है। सूर्य और गुरु ग्रह की स्थिति के कारण यह मेला लगता है और इन दोनों ग्रहों की स्थितियों से ही इन मेलों का नाम अलग-अलग है।

पुराणों की मान्यता है कि जब देवता और दानवों ने समुद्र मंथन किया था, तब अमृत कलश निकला था। इस अमृत को पाने के लिए देवता और दानवों के बीच युद्ध हुआ था। इसी युद्ध में कलश से अमृत की कुछ बूंद इन चार स्थानों हरिद्वार, इलाहाबाद, नासिक और उज्जैन में गिरी थीं। तभी से इन चारों जगहों पर यह मेला आयोजित हो रहा है। कलश यानी कुंभ से अमृत की बूंद यहां गिरने से इन मेले को कुंभ का मेला कहा जाने लगा।

ये हैं सूर्य और गुरु के ज्योतिषीय योग

1. हरिद्वार में यह मेला तब आयोजित होता है, जब सूर्य मेष राशि में और गुरु कुंभ राशि में होता है।

2.इलाहाबाद (प्रयाग) में यह मेला तब आयोजित होता है, जब सूर्य मकर राशि में और गुरु वृष राशि में होता है।

3.नासिक में तब आयोजित होता है, जब गुरु सिंह राशि में प्रवेश करता है। इसके अलावा जब अमावस्या पर कर्क राशि में सूर्य और चन्द्रमा प्रवेश करते हैं, उस समय नासिक में सिंहस्थ का आयोजन होता है।

4.उज्जैन में मेष राशि में सूर्य और सिंह राशि में गुरु के आने पर सिंहस्थ का आयोजन किया जाता है।उज्जैन और नासिक के मेले के समय गुरु सिंह राशि में होता है, इसीलिए इस मेले को सिंहस्थ कहा जाता है।

प्रोत्साहन की शक्ति

एक दिन थॉमस अल्वा एडिसन जो कि प्रायमरी स्कूल का विद्यार्थी था, अपने घर आया और एक कागज अपनी माताजी को दिया और बताया-

''मेरे शिक्षक ने इसे दिया है और कहा है कि इसे अपनी माताजी को ही देना..!''

उक्त कागज को देखकर माँ की आँखों में आँसू आ गये और वो जोर-जोर से रो पड़ीं, जब एडीसन ने पूछा कि ''इसमें क्या लिखा है..?''तो सुबकते हुए आँसू पोंछ कर बोलीः- इसमें लिखा है..

आपका बच्चा जीनियस है हमारा स्कूल छोटे स्तर का है और शिक्षक बहुत प्रशिक्षित नहीं है, इसे आप स्वयं शिक्षा दें ।

कई वर्षों के बाद उसकी माँ का स्वर्गवास हो गया। थॉमस एल्वा एडिसन जग प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन गये।

उन्होनें कई महान अविष्कार किये, एक दिन वह अपनी पारिवारिक वस्तुओं को देख रहे थे। आलमारी के एक कोने में उन्होनें कागज का एक टुकड़ा पाया उत्सुकतावश उसे खोलकर देखा और पढ़ने लगा।

वो वही कागज था.. उस कागज में लिखा था-

आपका बच्चा बौद्धिक तौर पर कमजोर है और उसे अब और इस स्कूल में नहीं आना है। एडिसन अवाक् रह गये और घण्टों रोते रहे, फिर अपनी डायरी में लिखा एक महान माँ ने बौद्धिक तौर पर कमजोर बच्चे को सदी का महान वैज्ञानिक बना दिया, यही सकारात्मकता और सकारात्मक पालक (माता-पिता) की शक्ति है ।

ऋग्वेद की सूक्तियाँ

1. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।
   उस एक प्रभु को विद्वान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं।
2. संगच्छध्वम् संवदध्वम्।
   मिलकर चलो और मिलकर बोलो।
3. न स सखा यो न ददाति सख्ये।
   वह मित्र ही क्या, जो अपने मित्र को सहायता नहीं देता।
4. सुगा ऋतस्य पन्थाः।
   सत्यका मार्ग सुख से गमन करने योग्य, सहल है।
5. स्वस्ति पन्थामनुचरेम।
   हम कल्याण-मार्ग के पथिक हों।
6. सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते।
   देव पद के अभिलाषी सरस्वती का आव्हान करते हैं।
7. उप सर्प मातरं भूमिम्।
   मातृ भूमि की सेवा कर।
8. यतेमहि स्वराज्ये।
   हम स्वराज्य के लिये सदा यत्न करें।
9. अहमिन्द्रो न पराजिग्ये।
   मैं आत्मा हूँ, मुझे कोई हरा नहीं सकता।
10. उद्बुध्यध्वं समन सः सखायः
    हे एक विचार और एक प्रकार के ज्ञान से युक्त मित्रजनो, उठो ! जागो !!

धर्म के लिए क्रोध

पितामह भीष्म के जीवन का एक ही पाप था कि उन्होंने समय पर क्रोध नही किया और जटायु के जीवन का एक ही पुण्य था कि उसने समय पर क्रोध किया। परिणाम स्वरुप एक को वाणों की शैया मिली और एक को प्रभु राम की गोद।

अतः क्रोध तब पुण्य बन जाता है जब वह धर्म एवं मर्यादा की रक्षा के लिए किया जाये और वही क्रोध तब पाप बन जाता है जब वह धर्म व मर्यादा को चोट पहुँचाता हो।

शांति तो जीवन का आभूषण है। मगर अनीति और असत्य के खिलाफ जब आप क्रोधाग्नि में दग्ध होते हो तो आपके द्वारा गीता के आदेश का पालन हो जाता है। मगर इसके विपरीत किया गया क्रोध आपको पशुता की संज्ञा भी दिला सकता है। धर्म के लिए क्रोध हो सकता है, क्रोध के लिए धर्म नहीं।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।।

अर्थ- कभी भी बड़ी चीज को देखकर छोटी चीजों को फेंकना नहीं चाहिए, क्योंकि जो काम सुई कर सकती है, वो काम तलवार नहीं कर सकती।

मानव मन के बोल

कर्म ही पूजा है

गतांक से आगे.....

मैं आपको निवेदन कर रहा था पाली-मारवाड बहुत अच्छा जीवन, खेरवा की भी बड़ी याद आती है। 12 दिन के लिये खेरवा में गये। 72 रूपये मिलेंगे। एक-एक रूपये का महत्त्व, कितना भी आपके पास पैसा हो गया हो फिर भी समझना चाहिये। कभी लक्ष्मी जी का अपमान मत कीजिये।

समानता के भाव

झूठा छोड़ना तो लक्ष्मी माता का अपमान है, अन्न देवता का अपमान है। पाली मारवाड़ में हमारे कश्चप साहब रहे। उस समय एक एम.एल. शर्मा साहब हमारे सुपरिडेंट साहब हुआ करते थे। डिवीजनल सुपरिडेंट, सुपरिडेंट ऑफ पॉस्ट ऑफिसेज। ये एक कार्यालय होता था जिसके अन्तर्गत पाली जिले के जितने भी पोस्ट ऑफिस है उन सब के वो एडमिनिस्ट्रेटिव इंचार्ज होते थे। इंस्पेशन पर भी जाते थे।

रामचरित्र मानस में एक दोहा, जब रामजी, रावण बहुत प्रलाप कर रहा था। रावण कह रहा था हे तपस्वी! तुम दोनों भाइयों का मैं वध कर दुंगा। भगवान श्री राम जी ने कहा था -

शूर समर कर नी कर ही, कहीं ना जनावे आपू।
विद्यमान रन पाई रिपू, कायर कर ही प्रलापू।।

कायर नहीं बनना है। कायर का अर्थ है कॉनफिडेंस की कमी, ईश्वर को हाजिर-नाजिर नहीं समझना। हर समय भयभीत रहना महा पाप है। भयभीत रहने से भी बहुत बीमारियां हो जाती है। भारत में मैंने देखा कई नारियों को पति भयभीत करके रखते है। भाई ! उनमें भी ईश्वर है, इसको अनुभूति करना चाहिये। सत्यता तो यही है यदि उन में ईश्वर नहीं होता तो उनके हाथ-पैर नहीं चलते, धड़कने बन्द हो जाती है। कहते हैं राम निकल गया।

क्रमश अगले अंक में ...

भगवान भी उनकी सहायता करते है जो अपनी सहायता आप करते हैं

तीन यात्री पहाड़ की यात्रा पर निकले। मार्ग दुश्वार था, रास्ते में धूप व थकान से उनका गला सूखने लगा। प्यासे यात्रियों की दृष्टि दूर बहते एक झरने पर पड़ी। एक यात्री ने आसमान की ओर मुख किया और भगवान से प्रार्थना करने लगा कि वह बिना किसी प्रयास के झरने तक पहुँच जाए। दूसरे ने मेघों को प्रसन्न करने के लिए स्तोत्र पढ़ना प्रारंभ कर दिया। तीसरा चुपचाप झरने की तरफ चल पड़ा और कुछ समय की यात्रा के बाद झरने तक पहुंच गया। वहां उसने अपनी प्यास बुझाई और आगे की यात्रा पर निकल पड़ा। भगवान भी उनकी ही सहायता करते हैं, जो अपनी सहायता आप करने को तत्पर रहते है।

☼☼☼☼☼ गुणकारी बेल फल ☼☼☼☼☼

गर्मियों में हमारे शरीर को पानी की सख्त जरुरत होती है क्योंकि शरीर से काफी मात्रा में पानी और तरल हमारे शरीर से पसीने के रूप में बाहर निकलता है और यह हमारे शरीर से विषैले पदार्थो को बाहर निकालने का ही एक जरिया है इसलिए गर्मी का एक फायदा भी है कि हमे चूँकि तरल पदार्थो की जरुरत होती है इसलिए हम फलों के जूस और अन्य तरल माध्यमो से अपने शरीर को सभी तरह के पोषक तत्वों की आपूर्ति कर सकते है इसमें से बेल के फल भी एक गुणकारी माध्यम है और इसके लाभ कुछ इस तरह है।

गर्मी में हम लू के प्रभाव में आ जाते है तो बेल का शरबत बनाकर पीने से बहुत लाभ होता है और इस से हमारे शरीर के तापमान को भी नियंत्रित करने में आसानी से होती है ।

पीलिया रोग होने पर आयुर्वेद के अनुसार बेल की कोपलों का पचास ग्राम रस और थोड़ी सी पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर पीने से बड़ा लाभ होता है और इसे सुबह शाम दोनों समय पीना चाहिए । मुंह के छाले होने की दशा में भी अगर आप बेल को पानी में उबालकर उस से कुल्ला करते है तो मुंह के छालों में लाभ होता है । मोच या अंदरूनी चोट होने पर बेल पत्रों को पीस कर गुड में पकाएं और पुल्टिस बनाकर प्रभावित अंग पर लगाने से तीन चार दिन में बदलते रहे इस से अंदरूनी चोट में बड़ी राहत मिलती है ।

अगर पुराना आन्वरोग है तो आधे कच्चे बेल के फल का प्रतिदिन सेवन करें जल्दी ही आपको इस रोग से मुक्ति मिल जाएगी ।

यह फल सुपाच्य होता है और उर्जा से भरपूर भी होता है इसलिए इसका सेवन डायरिया में भी लाभप्रद होता है और आयुर्वेद के अनुसार पके हुए फल के सेवन से वात और काफ से मुक्ति मिलती है ।

सम्पादकीय

मनुष्य बहुत कुछ कामनाएँ रखता है। यह चाहिए, वह चाहिए पर जो कुछ वह चाहता है, उसमें से कितना पूरा होता है? शायद नहीं के बराबर। जो चाहें सो पाएं, वाली बात इसी कारण आश्चर्यजनक लग सकती है। भला यह कैसे संभव है? हम जो चाहें सो पाएँ–कैसे हो सकता है? अधिकांश इस पर विश्वास ही न करें, पर दुनिया के एक नहीं लाखों दृष्टांत इस बात के प्रमाण हैं कि जो चाहा, सो पाया....... आखिर कैसे ?

कोई चमत्कार या जादू के बल पर नहीं, वरन् अपने अन्तःकरण की शक्ति के बल पर पाया। भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करने वाले लोगों को चिंतकों और मानव ज्ञान शास्त्रियों ने निकम्मा और मूर्ख माना है। भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं होती है। 'जब भाग्य होगा अपने आप काम हो जाएगा' या अभी अवसर कहाँ आया है'।

अवसर आते ही सारा काम बन जाता है। इस तरह की भावनाएँ केवल अपनी असफलता पर परदा डालने की कोशिश है। इस तरह हम अपनी कमजोरियाँ छिपाते हैं। वास्तव में भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं है। यह केवल मन का वहम मात्र है। कोई भी कार्य करने का अवसर या भाग्य देखना निहायत बेतुकी बात है। जो कर्मयोगी हैं, वह कभी इसकी प्रतीक्षा नहीं करते। धन कुबेर रॉकफैलर का कथन था, **'मैंने कभी भाग्य और अवसर की प्रतीक्षा नहीं की, जब भी काम की बात मन में आई, शुरु कर दिया। मैंने अपने जीवन में प्रत्येक क्षण को ही भाग्य और अवसर माना है।'** अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करना अपनी सफलता को पीछे फेंक देना है। हो सकता है कि जब तक इतना समय निकल जाए कि आप करने पर भी न पा सकें। यदा–कदा भाग्य के फेर में भी मनुष्य अपने जीवन को दुःख से भर लेता है।

अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा न कर आप अपना कार्य शुरू कर दें। दूसरों को देखें – लोग उनकी प्रशंसा करते हैं–'कितना भाग्यशाली है अमुक–' 'अमुक का सितारा बड़ा बुलंद है' –पर क्या 'अमुक' के जीवन में झांकने की कोशिश की कि 'अमुक' आज जिस शिखर पर है, उस तक पहुंचने के लिए 'अमुक' ने कितना कठोर परिश्रम किया है? अमुक ने क्या–क्या संकट नहीं बर्दाश्त किए? यह तो 'अमुक' का दिल जानता होगा कि वह कैसे उस स्थान तक आया है? दूसरों का सुख, वैभव देखकर आपको ईर्ष्या होती है, पर उस सुख को भोगने वाले दिलों से पूछिए कि कैसे पाया है यह सब ?............... और अपने आपको बनाए रखने के लिए उनको अभी भी क्या–क्या करना पड़ रहा है ? अतएव जब तक आप इस महत्व को नहीं जानेंगे और केवल 'अवसर', 'भाग्य' की राह देखते रहेंगे, तब तक आप कुछ नहीं कर सकते हैं।

दूध में है – शक्ति

हर मौसम में दूध की मलाई में मिश्री मिलाकर खाने से शरीर को शक्ति मिलती है। एक बादाम को घिसकर दूध में मिलाकर पीना चाहिए, इससे शरीर को बल मिलता है। छोटे बच्चों को दूध अवश्य पीना चाहियें।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता / पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1.	नितिन	सुनिल	3	पुरूष	हरिद्वार	उतराखण्ड
2.	आदित्य	नीरज	4	पुरूष	बांका	बिहार
3.	पुरूषौत्तम	गौतम	4	पुरूष	नालन्दा	बिहार
4.	इकराम	आलमगीर	4	पुरूष	बेतिया	बिहार
5.	शिवनारायण	बेगाराम	5	पुरूष	गंगानगर	राजस्थान
6.	विशाल	प्रमोद	5	पुरूष	पटना	बिहार
7.	जसुराम	राणाराम	8	पुरूष	जोधपुर	राजस्थान
8.	मनीषा	राजेश	8	स्त्री	गजीपुर	उत्तरप्रदेश
9.	गोविन्द	चन्द्रपाल	10	पुरूष	दिल्ली	नईदिल्ली
10.	सोनु	रणजीत	13	पुरूष	पटना	बिहार
11.	रूपांजली	कृष्णानन्द	17	स्त्री	पलामु	झारखण्ड
12.	सवीता	भिखारी	22	स्त्री	बस्ती	उत्तराखण्ड
13.	दुलेश	जगदीश	34	पुरूष	सुरत	गुजरात
14.	अंश	केलाशचन्द्र	4	पुरूष	लखिमपुर	उत्तरप्रदेश
15.	अमन	रफीक	5	पुरूष	कानपुर	उत्तरप्रदेश

क्रमशः

गर्मी में लू से बचने के आसान घरेलू उपाय

गर्मी का मौसम लगभग शुरू हो चुका है इस मौसम में गर्म हवा और बढ़े हुए तापमान से लू लगने का खतरा बढ़ जाता है। चिलचिलाती गर्मी में लू से बचने के लिए घरेलू उपाय काफी कारगर साबित होते हैं।

जानिए लू से बचने के कुछ घरेलू उपाय

1. धूप में निकलते वक्त छाते का इस्तेमाल करना चाहिए। सिर ढक कर धूप में निकलने से भी लू से बचा जा सकता है।

2. घर से पानी या कोई ठंडा शरबत पीकर बाहर निकलें। जैसे आम पना, शिकंजी, खस का शर्बत ज्यादा फायदेमंद है।

3. तेज धूप से आते ही और ज्यादा पसीना आने पर फौरन ठंडा पानी नहीं पीना चाहिए।

4. गर्मी के दिनों में बार–बार पानी पीते रहना चाहिए ताकि शरीर में पानी की कमी न हो।

5. पानी में नींबू और नमक मिलाकर दिन में दो–तीन बार पीते रहने से लू लगने का खतरा कम रहता है।

6. धूप में बाहर जाते वक्त खाली पेट नहीं जाना चाहिए।

7. सब्जियों के सूप का सेवन करने से भी लू से बचा जा सकता है

8. गर्मी के दिनों में हल्का भोजन करना चाहिए। भोजन में दही को अवश्य शामिल करना चाहिए।

9. नहाने से पहले जौ के आटे को पानी में मिलाकर पेस्ट बनाकर बॉडी पर लगाकर कुछ देर बाद ठंडे पानी से नहाने से लू का असर कम होता है।

10. लू से बचने के लिए कच्चे आम का लेप बनाकर पैरों के तलवों पर मालिश करनी चाहिए।

11. लू लगने और ज्यादा गर्मी में शरीर पर घमौरियां हो जाती हैं। बेसन को पानी में घोलकर घमौरियों पर लगाने से फायदा होता है।

12. लू लगने पर जौ के आटे और प्याज को पीसकर पेस्ट बनाएं और उसे शरीर पर लगाएं। जरूर राहत मिलेगी।

13. धूप में निकलने से पहले नाखून पर प्याज घिसकर लगाने से लू नहीं लगती। यही नहीं धूप में बाहर निकलते वक्त अगर आप छिला हुआ प्याज लेकर साथ चलेंगे तो भी आपको लू नहीं लगेगी

14. धूप से आने के बाद थोड़ा सा प्याज का रस शहद में मिलाकर चाटने से लू लगने का खतरा कम होता है।

15. गर्मी के मौसम में खाने के बाद गुड़ खाने से भी लू लगने का डर कम होता है।

16. टमाटर की चटनी, नारियल और पेठा खाने से भी लू नही लगती।

जब भगवान आदेश देते है तो शैतान को भी उस आदेश का पालन करना पडता है

एक बार एक अत्यंत गरीब महिला जो ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास करती थी। एक बार अत्यंत ही विकट स्थिति में आ गई। कई दिनों से खाने के लिए पुरे परिवार को नहीं मिला।

एक दिन उसने रेडियो के माध्यम से नगर में अपना सन्देश भेजा कि ईश्वर उसकी मदद करे।

यह प्रसारण एक नास्तिक और अहंकारी अमीर व्यक्ति ने सुना और उसने सोचा कि क्यों न इस महिला के साथ कुछ ऐसा मजाक किया जाये कि उसकी ईश्वर के प्रति आस्था डिग जाय।

उसने अपने नौकर को कहा कि वह ढेर सारा खाना और महीने भर का राशन उसके घर पर देकर आ जाये और जब वह महिला पूछे किसने भेजा है तो कह देना कि " शैतान" ने भेजा है।

जैसे ही महिला के पास सामान पंहुचा पहले तो उसके परिवार ने तृप्त होकर भोजन किया । फिर वह सारा राशन रखने लगी।

जब महिला ने पूछा नहीं कि यह सब किसने भेजा है तो नौकर से रहा नहीं गया और पूछा , आपको क्या जिज्ञासा नही होती कि यह सब किसने भेजा है।

उस महिला ने जवाब दिया.................

मैं इतना क्यों सोंचू मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है,

मेरा भगवान जब आदेश देते है तो शैतान को भी उस आदेश का पालन करना पडता है !

नौकर ने सारी बात अपने मालिक को बताई तो मालिक नौकर की बात सुनकर अवाक् रह गया।

मुट्ठी में तकदीर हमारी

गतांक से आगे...........

पाण्डव कुल महाभारत का युद्ध, अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष को लेकर अपने बड़े भाई युधिष्ठिर जी को प्रणाम करने पहुँचते हैं। अर्जुन–प्रणाम बड़े भैय्या।

एक दिन पहले ही युधिष्ठिरजी को कर्ण ने इतने तीर लगाए दुःशासन ने इतना कष्ट पहुँचाया। युधिष्ठिर घाव से कराह रहे थे, उन्हें लगा कि गाण्डीव धारी अर्जुन के होते हुए मुझे इतना कष्ट हुआ, उनको क्रोध आ गया। उन्होंने कहा – अरे अर्जुन, क्या प्रणाम करता है, फैंक दे गाण्ड़ीव को बाहर। क्या काम का गाण्डीव? तेरे गाण्डीव धनुष के होते हुए भी, देख मेरे शरीर में कितने तीर लगे हुए हैं? एक–दो क्षण के लिये अर्जुन उदास हुआ और भगवान कृष्ण ने अचानक देखा कि अर्जुन ने गाण्डिव को ताना और निशाना युधिष्ठिर जी की तरफ किया। जैसे ही किया, कृष्ण भगवान ने बांह पकड़ ली। बोले–मूर्ख, क्या करता है?ये तेरे बड़े भाई है, ये तेरे पिता के समान हैं। अर्जुन – प्रभु मैं क्या करूं? मैंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि कोई मेरे गाण्डिव का अपमान करेगा तो मैं उसको जीवित नहीं छोडूंगा, उसका वध करूंगा। प्रभु मैं अपनी प्रतिज्ञा से बंधा हुआ हूँ। मेरे बड़े भैय्या ने गाण्डीव का अपमान कर दिया–प्रभु। मैं बहुत दुखी हूँ, क्या करूँ? प्रभु–प्रभु रक्षा करो। कृष्ण भगवान ने कहा, हे अर्जुन, अपने से बड़ों का अपमान करना, उनको वध करने के जैसा ही होता है। ऐसा शास्त्रों में, उपनिषदों में आया है। तूं तेरे बड़े भाई का जितना अपमान करना चाहे कर ले, तेरी प्रतिज्ञा भी पूरी हो जायेगी और युधिष्ठिर भी जीवित रहेंगे।

महाभारत काल में वेदव्यास जी महाराज ने फरमाया, वैषम्पयान ऋषि जी ने कहा – हे राजा जन्मेजय, तुम्हारे पितृों में से अर्जुन ने फिर युधिष्ठिर जी का बड़ा अपमान किया। हे बड़े भैय्या, तुम जुआ नहीं खेले होते तो हमारी ऐसी हालत नहीं हुई होती। तुम्हारे जुआ खेलने से द्रौपदी का चीर–हरण हुआ हमें 12 साल वनवास में रहना पड़ा। एक साल हमें सैरन्ध्री बनना पड़ा, बृहन्नला बनना पड़ा, अज्ञातवास करना पड़ा बहुत अपमान किया।

युधिष्ठिर ने सिर झुका लिया, कृष्ण भगवान की आँखों में आँसू आ गए। थोड़ी देर बाद अर्जुन ने फिर गाण्डीव पर तीर चढ़ाया। इस बार तीर अपने सीने की तरफ था। कृष्ण ने कहा – मूर्ख, अब क्या कर रहा है? बोला– प्रभु में ग्लानि से मरा जा रहा हूँ, मुझे बड़ा दुख है। जिन बड़े भाईसाहब को पिता की तरह माना, उनका मैंने इतना अपमान किया। अब मैं आत्महत्या करके मर जाऊंगा मैं जीना नहीं चाहता। कृष्ण भगवान ने बांह पकड़ कर कहा – भैय्या, उपनिषदों में यह भी आया है कि अपनी खुद की प्रशंसा खुद करना भी आत्महत्या के समान है। तूं जितनी तेरी शेखी बघारना चाहे, उतनी बघार ले।

और इस प्रकार महाभारतकाल में अर्जुन के भी प्राण बचे, युधिष्ठिर के भी प्राण बचे। ऐसे कृष्ण भगवान की कृपा से हमारे बीच में आज के मुख्य अतिथि श्रीमान् सोहनजी चड्ढा साहब और श्रीमान् रमेशजी गोयल साहब।

सेवा धर्म महान है – अति प्राचीन विचार।
सेवारत इंसान ही समझा जीवन सार।।

आनन्द आ गया, आनन्द आ गया। इस मीना जी का ऑपरेशन भी यहीं हुआ। इनके पिताजी श्री बहादुर जी भी नारायण सेवा में साधक है। इनके भाई भी साधक हैं दिलीप भैय्या और बहुत अच्छा परिवार है।

मीनाजी – जी मेरा यहाँ पर ऑपरेशन हुआ, पोलियो है मुझे भी। तीन ऑपरेशन हुए यहाँ पर, मैं अभी ठीक तरह से चल लेती हूँ और अभी नारायण सेवा में गुरूजी के सानिध्य में हूँ।

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़